Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE-XI Nov. 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

राजनीतिशास्त्र का जनक अरस्तू

डॉ. विभा देशपांडे
कला व विज्ञान महाविद्यालय कुऱ्हा

अरस्तू यूनान के महान दार्शनिक प्लेटो का शिष्य था। वह एक अत्यन्त प्रतिभावान तथा मेघावी दार्शनिक के रुप में राजनीतीक चिन्तन मे विख्यात है। अरस्तू को प्रथम राजनीतीशास्त्री के रुप मे भी जाना जाता है। उसके विचार बहु आयामी है। उसकी कृती पॉलीटिक्स को राजनीती दर्शन की सर्वश्रेष्ठ कृति की संज्ञा दी जाती है। भ

अरस्तू का जन्म ३८४ ई. पू. स्टेनिश के थ्रसियन नगर में हुआ था। उसके पिता निकोमैक्स मेकिडोनिया के राजदरबार में वैद्य थे। परिणामस्वरुप अरस्तू ने चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन किया। अपने जन्म स्थान में वे १८ वर्ष की आयु तक रहे। ३६७ ई. पूर्व प्लेटो की शिष्यता में दर्शन शास्त्र के अध्ययन के लिये ऐथेन्स चले गये । और बाद मे अरस्तू प्लेटो के शिष्य बन गये और अपना अधिकांश जीवन वही व्यतीत किया।

अरस्तू से पूर्व और बाद में राजनीतिशास्त्र के अनेक ऐसे दार्शनिक हुए है, जिन्हे प्रतिभाशाली कहा जा सकता है। प्लेटो एक्विनास, हॉब्स, लॉक, रुसो, काण्ट, स्पेन, आदि ऐसे ही राजनीतिक दार्शनिक है। परन्तु प्रथम राजनीतिक वैज्ञानिक बनने का श्रेय अरस्तू को ही प्राप्त है। इसका कारण यह की अरस्तू ही पहला राजनीतिक दर्शन है जिसने राज्य तथा शासन संम्बधी विविध विषयों राज्य का उगम, राज्य की प्रकृती व उद्देश, संविधानों का वर्गीकरण, शासन, कला, नागरिकता, विधि की सर्वोच्चता, न्याय, स्वतंत्रता और सत्ता सम्बध आर्थिक और राजनीतिक तत्वों में पारस्परिक किया, कांती आदी विषयो का क्रमबध्द और वैज्ञानिक अध्ययन किया। उसने ही राजनीतिशास्त्र को एक पृथक विज्ञान का रुप दिया, राजनीति को नैतिकता से पृथक किया।

प्लेटो गांधी जैसे दार्शनिक, जिन्होने राजनीतिशास्त्र और नीतिशास्त्र मे काई भेद नही किया। दुसरी और मैकियावली, हॉब्स और मार्क्स जैसे दार्शनिक जिन्होने राजनीतिशास्त्र को नीतिशास्त्र से पूर्णत पृथक किया है। परन्तु अरस्तु ने राजनितीशास्त्र और नीतिशास्त्र में घनिष्ठ सम्बन्ध को स्वीकार करते हुये भी उन्हें प्लेटो की भॉती एक नहीं माना और न ही मैकीयावाली की भाँती उनका पूर्ण विच्छेद किया और न ही मार्क्स की भाँती धर्म को अफीम की गोली माना। अरस्तू राजनीति और नैतिकता को पृथक – पृथक मानता है। अरस्तू के अनुसार नीतिशास्त्र व्यक्ति के निजी हित और राजनीति शास्त्र उसके सामाजिक हित से सम्बधित है। अरस्तू प्रथम दार्शनिक है जिसने आगमनात्मक पध्दति का अनुसरण करके राजनीतिशास्त्र मे पर्यवेक्षक, परीक्षण, निरीक्षण, ऐतिहासिक और तुलनात्मक पध्दतियों का अनुसरण किया। उन्होंने वैज्ञानिक दृष्टीकोण से ही अध्ययन किया अरस्तू ने १५८ संविधानों का ग्रहन अध्ययन और लीसियस में १२ वर्ष के अनुसंधान के आधार पर ही राज्य और शासन सम्बन्धी विषयों पर निष्कर्ष निकाले थे।

राजनीतिशास्त्र और नितिशास्त्र को व्यावहारिक विज्ञानो की श्रेणी में रखने का कार्य अरस्तू ने किया अपने विचारो को रखते हुये उन्होने की राजनितीशास्त्र के नियम विज्ञानो की भाँती अटल या निश्चित नही ये आकस्मिक और परीवर्तनशील है, परंतू इन्हे मानव व्यवहार के वास्तविक पर्यवेक्षन,निरीक्षण, विश्लेषन, अनुभव आदी द्वारा निश्चित किया जा सकता है। अरस्तू का यह दृष्टिकोण ही उसे वैज्ञानिक बताता है। अरस्तू राज्य को सावयव मानता था। उसके अनुसार जिस प्रकार एक चैतन्य प्राणी रुपी पूर्ण के विभिन्न अंग होते है तथा ये अंग परस्पर पूरक होते है। उसी प्रकार राज्य भी

एक सजीव प्राणी है। जिसके अनेक अंग है तथा ये विविध अंग अपने अस्तित्व व परिभाषा के लिए संम्पूर्ण पर निर्भर होते है।

अत राज्य के अभाव किसी स्वतंत्रता या अधिकार की हम कल्पना भी नहीं कर सकते, व्यक्ति के नैतिक विकास के लिए स्वतंत्रता व अधिकार आवश्यक है। अत राज्य व्यक्ति के नैतिक उन्नति के लिये एक आवश्यक संस्था है। अरस्तु राज्य की अपरिहार्यता को घोषित करते हुए कहता है की यदि कोई व्यक्ति ऐसा है जो समाज में नहीं रह सकता या वह इतना आत्मनिर्भर है की उसे समाज की जरुरत ही नहीं है तो वह या तो पशु है या देवता। व्यक्ति को सुखी व सद्‌गुणी बनाने के लिए राज्य जरुरी है। अरस्तू के विचारो को पढने के बाद हमें विविध निष्कर्ष निकलते हुये दिखाई देते है।

१) अरस्तू राज्य की समृध्दी व आत्मनिर्भरता के लिए समाज में कार्यात्मक विभन्नता को आवश्यक मानता था।

२) राज्य को सर्वोच्च पद प्रदान करने के बावजूद वह व्यक्ति के हित को नजर अन्दाज नहीं करता। इसलिए वह संरक्षक वर्ग के लिए प्रस्तावित सम्पति व परिवार के साम्यवादी सिध्दान्त का घोर विरोध करता है।

३) अरस्तू ने स्त्री पुरुषो को बराबर का दर्जा दिया परंतु उसने राजनीतिक क्षेत्र में स्त्री को पुरुषों का प्रतिद्वन्दी नही बनना चाहिये ऐसे विचार व्यक्त करके स्त्री को घर की सीमा में कैद कर दिया जो उचित नहीं आज उसके इन विचारों को मान्य नही किया जा सकता।

४) सर्वक्षेष्ठ संविधान का सवाल आता है तो वह जनता के शासन के स्थान पर मध्यम वर्ग के शासन को सर्वोत्तम मानता था। आज भी हम अनुभव करते है की मध्यम वर्गो का ही शासन उचित मानते है परंतु शासन में बैठने के बाद लोग भ्रष्ट मार्ग को न अपनाये, यही अपेक्षा करते है।

५) वर्तमान में उसके विचार उपयुक्त है जैसे ही हमारे देश में भ्रष्टाचार का बोलबाला बढा था वर्तमान सरकार ने ५००,१००० के चलन बंद कर नागरिको को अनैतिकता से दूर करने का मार्ग अपनाकर, यह सिध्द कर दिया की राज्य ये एक नैतिक संघटना है। अरस्तू के राजनितीक चिन्तन का महत्व इस बात से स्पष्ट है की प्राचीन युग, मध्ययुग, और आधुनिक युग उसके चिन्तन उसके चिन्तन से प्रभावित है। आधुनिकयुग में अरस्तू के पॉलिटीक्स ग्रंथ का महत्व आज भी है इसके अध्ययन के बिना राजनीतिशास्त्र का अध्ययन अपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ –

१) अरस्तू – दिप्ति शर्मा एम. कुमार अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली

ISSN 2349-638x
www.aiirjournal.com